The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 1 | Issue 4 | November 2023
ISSN: 2583-973X
Website: www.theacademic.in

गांधी जी के विचारों की वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रासंगिकता

गंगा सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
स्वामी विवेकानंद कॉलेज ऑफ़ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी, हल्द्वानी

ARTICLE DETAILS
Research Paper

Keywords :
गांधीजी , विचार, सिद्धांत , प्रासंगिकता,अहिंसा, सत्याग्रह, शांति

ABSTRACT

आज संसार के समक्ष कई समस्याएँ उठ खडी है जिनमें आतंकवाद एवं हिंसात्मक गतिविधियाँ विश्व शांति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधक है। विश्व में राजनीतिक गतिविधियों को आतंकवाद अपने क्रियाकलापों द्वारा निरंतर प्रभावित कर रहा है। जिसके कारण उचित एवं न्यायपूर्ण कार्यप्रणाली का अस्तित्व ही खतरे में है। बीसवी सदी के प्रारम्भ में ही गाँधी ने परिवर्तन की इस दिशा का सशक्त प्रतिवाद किया था। राज्य का दमनात्मक संयंत्र हो अथवा सामाजिक संरचना की प्रतिबंधित संस्थाएँ, सांस्कृतिक विरासत की वर्चस्ववादी मूल्य व्यवस्थाएँ हो अथवा आधुनिक विकास की अवधारणा द्वारा शोषण की वैधता-गाँधी का प्रतिवाद बुनियादी था सम्पूर्ण था। वस्तुतः गाँधी का प्रतिवाद जिन मानवीय एवं सामाजिक सरोकारों से संबंधित था वे आज भी उतने ही महत्वपूर्ण एवं समाधान की प्रतीक्षा में है, जितने गाँधी के स्वयं के काल में थे। संभवतः आगामी सदी में भी रहेंगे, क्योंकि फिलहाल परिवर्तन की उक्त दिशा परिवर्तित होती नही दिखाई।

इस नये युग में गाँधीजी के दर्शन की नयी परिभाषा की जरूरत है। आज सवाल यह भी उठाया जा रहा है कि क्या गाँधीजी के दर्शन की इस नयी सदी के बदलते हुए परिदृश्य में उतनी ही प्रासंगिकता है, जितनी पहले थी। आज इस ग्लोबल विश्व के समक्ष जो विश्व स्तरीय चुनौतियां है, उन्हें देखते हुए गाँधी दर्शन आज भी उतना ही जरूरी गाँधीजी है जितना पहले था, शायद उससे भी कहीं ज्यादा वर्तमान राजनीतिक समाज में गाँधीवादी वैचारिक चिंतन एक प्रभावी मार्गदर्शक साबित होगा। आज गाँधीवादी दर्शन संपूर्ण विश्व को एक नया दिशा-बोध दे रहा है।

गाँधी दर्शन की नयी परिभाषा हमारे सामने है। हिंसा, आतंक, गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी, बिखराव और दहशत आदि समस्याओं से जूझते हुए इस विश्व को इन दिनों में गाँधी दर्शन और उनका अहिंसा का प्रयोग ही एकमात्र सहारा है, जो इसे नया रास्ता दिखा सकता है। गाँधी के मत में आधुनिक पश्चिमी औद्योगिक सभ्यता के मूल में सम्पत्ति की असीम चाह एवं भौतिक सुखों के पीछे अंधी दौड है, जो व्यक्ति की संपूर्ण क्षमता को भौतिक साधनों के संवर्धन में ही लिप्त कर देती है।

परिणामस्वरूप तत्कालीन अन्याय की स्थिति में बदलाव सुनिश्चित हुआ। इस दृष्टि से गाँधीजी का अहिंसात्मक आंदोलन विश्व व्यापकता लिये हुए है। किंतु वर्तमान विश्व राजनीति की स्थिति को ध्यान में रखते हुए गाँधीवादी सिद्धांतो की व्यावहारिक जीवन में और अधिक उपयोगिता अनुभव की जाती रही है। एक आम आदमी को मसीहा के रुतबे तक पहुँचाना यह गाँधी दर्शन के हिस्से ही आता है। हालाँकि यह तथ्य भी झुठलाया नहीं जा सकता कि विश्व के कितने ही अन्य चिंतकों ने मानवीय संघर्ष के कितने ही रूप प्रस्तुत किये है,परंतु अहिंसा का चिंतन बोध जिस प्रकार सामाजिक चिंतन बोध के रूप में हमें गाँधी दर्शन में दिखाई देता है शायद किसी अन्य में नहीं।

- **शोध के मुख्य उद्देश्य**

I. वर्तमान विश्व के मॉडल को पहचानना एवं उसकी समीक्षा करना।

II. विश्व राजनीति को वर्तमान समस्याएँ किस तरह प्रभावित कर रही है, का अवबोध करना।

III. सत्याग्रह एवं विश्व राजनीति के संदर्भ में विरोध के तरीकों में व्यावहारिक रूप से शालीनता लाना।

IV. अहिंसा की पारंपरिक धारणा एवं गाँधीजी के अहिंसात्मक समाज संबंधी अध्ययन की जानकारी प्राप्त करना ।

V. अहिंसा को एक शक्ति के रूप में पहचानना एवं आत्मबल में वृद्धि सुनिश्चित करना ।

VI. गाँधीजी के सत्य, अहिंसा संबंधी विचारों से प्रभावित अंतर्राष्ट्रीय महापुरूषों की नीतियों की जानकारी उपलब्ध कराना एवं जीवन में व्यावहारिक रूप में अपनाने की प्रेरणा देना।

VII. एक अराजकता विहीन एवं शांतिपूर्ण विश्व राजनीतिक समाज की स्थापना करना।

- **साहित्य की समीक्षा**

➢ जैन माणक, "गाँधी के विचारों की 21वी सदी में प्रासंगिकता, 2010

इस पुस्तक को सात अध्यायों में विभक्त किया है। जिसमें गाँधीजी के सामाजिक और राजनीतिक विचारों का आधार अहिंसा है। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अहिंसा का प्रयोग किस प्रकार किया गया, अस्पृश्यता का लेखा-जोखा प्रस्तुत कर उनके योगदान का मूल्यांकन किया गया है।

➢ कौशिक आशा, "गाँधी नयी सदी के लिये", 2000

इस पुस्तक में गाँधी की व्यक्ति, समाज, राजनीति से संबद्ध अन्तर्दृष्टि की नवव्याख्या प्रस्तुत की गई है। जन कल्याण के लिये राजनीति का मूल कायाकल्प अनिवार्य है, यह स्वयं व्यक्ति के माध्यम से ही होगा। गाँधी अत्याधुनिक होते हुए भी पारंपरिक है एवं पारंपरिक होते हुए भी उत्तर आधुनिक है। भारतीय पुरूषार्थ परंपरा की जीवन्त कड़ी के रूप में गाँधी की प्रासंगिकता की व्याख्या की गई है।

➢ त्यागी पी. के. "भारतीय राजनीतिक विचारक", 2013

इस पुस्तक में लेखक ने विभिन्न भारतीय मनीषियों के राजनैतिक विचारों को उद्धृत किया है। इसमें लेखक ने न केवल राजनीतिक नेताओं हिन्दू उदारवादियों तथा आध्यात्मिक राष्ट्रवादियों, उदारवादियों उग्रवादियों

तथा समाजवादियों के अपनी मातृभूमि को साम्राज्यवादियों की दासता से मुक्त करने के यत्नों का क्रमिक विश्लेषणात्मक वर्णन किया है वरन उनके ऐसे सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक विचारों का विवेचन किया है, जिनका भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

- सक्सेना वन्दना, "गाँधी जीवन और दर्शन", 2006

इस पुस्तक में गाँधी दर्शन के संबंध में आत्म प्रकाश, जीवन उत्कृष्टता, आध्यात्मिकता, गुणवत्ता, नैतिकता, सभ्यता, विनम्रता एवं उसका प्रभाव, स्थिरता, अहिंसा, पवित्रता, सहजता, निष्काम कर्म, गाँधी दर्शन और गरीब, गाँधी दर्शन में नारी गाँधी दर्शन विभिन्न संस्कृतियों का मिश्रण, शिक्षा, पंचायती राज, आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण, श्रम की महत्ता, घृणा पाप से करो, पापी से नहीं एवं वर्तमान संदर्भ में उनके विचारों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला गया है।

- मुकालेल डॉ. जोसेफ सी., "गाँधीयन एज्यूकेशन", 2007

यह पुस्तक गाँधीजी की शैक्षिक अवधारणा से संबंधित है। जिनमें गाँधीजी के शिक्षा संबंधी विचारों की राष्ट्रीय नीति क्या हो? गाँधीजी की शिक्षा की अंतर्राष्ट्रीय व्यापकता, गाँधी अध्ययन का क्षेत्र, गाँधीजी के शैक्षिक विचारों का आधार नैतिक, सामाजिक, वैयक्तिक दृष्टि से गाँधीवादी शिक्षा के लक्ष्य गाँधीजी के शिक्षा संबंधी अनुभवों, गाँधीजी का शैक्षिक आदर्शवाद एवं प्रयोजनवाद, गाँधी शिक्षा में सत्याग्रह का प्रयोग, शिक्षा, बुनियादी शिक्षा, पवित्रता की शिक्षा बदलते सामाजिक मूल्यों के अनुरूप शिक्षा, शांति एवं सद्भाव की शिक्षा आदि बिन्दुओं पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

- लाल प्रो. रमन बिहारी, पलोड़ सुनीता, "शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग", 2008

इस पुस्तक में शैक्षिक चिंतन के संदर्भ में गाँधीजी के साथ-साथ रवीन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद श्री अरविन्द गिजुभाई परमहंस योगानंद, रूसो, पेस्टालॉजी, फ्रोबेल जॉन डीवी, डॉ. मॉन्टेसरी, बर्टेन्ड रसेल के शैक्षिक चिन्तन को भी वर्णित किया गया है।

- प्रभु आर. के. राव यू आर, "महात्मा गाँधी के विचार", 2011

नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में गाँधीजी के अपने स्वयं के बारे में विचारों का वर्णन किया गया है। सत्य, अभय, आस्था का दिव्य संदेश, अहिंसा का दिव्य संदेश, अहिंसा की शक्ति अहिंसा का प्रशिक्षण,हिंसा एवं आतंकवाद आक्रमण का प्रतिरोध, अहिंसक मार्ग, सत्याग्रह का दिव्य संदेश उपवास और सत्याग्रह, अपरिग्रह का दिव्य संदेश, श्रम संबंधी विचार,सर्वोदय का दिव्य संदेश, न्यासिता का दिव्य संदेश, ब्रह्मचर्य का दिव्य संदेश, स्वतंत्रता और लोकतंत्र का दिव्य संदेश, स्वदेशी भाईचारा संबंधी विचार राष्ट्रवाद बनाम अंतर्राष्ट्रवाद, नस्लवाद युद्ध और शांति परमाणु युद्ध शांति का मार्ग एवं कल की दुनिया आदि बिन्दुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

- पाण्डेय उपासना, "उत्तर आधुनिकता और गाँधी", 2007

इस पुस्तक के अंतर्गत आधुनिकतावाद एवं उत्तर-आधुनिकतावाद की अवधारणाओं का विवेचन किया गया है। गाँधी द्वारा की गई आधुनिकता की आलोचना समकालीन विमर्श गाँधी पूर्व-आधुनिक, आधुनिक एवं उत्तर-आधुनिक विचारक के रूप में सत्य एवं अहिंसा नवीन विश्व व्यवस्था की आधारशिला के रूप में, गाँधी दर्शन में सत्य व अहिंसा का तात्विक दृष्टिकोण धार्मिक दृष्टिकोण एवं नैतिक दृष्टिकोण, नवीन विश्व व्यवस्था के विभिन्न स्वरूप, राजनीति अर्थनीति, धर्म, शिक्षा एवं स्त्री आदि उपसंहार के रूप में निष्कर्षो का विवरण दिया गया है।

- त्रिपाठी विनायक, "आधुनिक गाँधी अन्ना हजारे 2012

यह पुस्तक अन्ना हजारे के जीवन दर्शन पर आधारित है। जिसमें उनके संघर्षमय बचपन, अन्ना हजारे का ग्रामीण विकास मॉडल सूचनाधिकार के पणेता, भारत में भ्रष्टाचार की स्थिति भ्रष्टाचार के खिलाफ अन्ना हजारे, अन्ना हजारे और सोशल मीडिया अन्ना का जन लोकपाल विधेयक लोकपाल व जनलोकपाल विधेयक पर एक तुलनात्मक दृष्टि आदि बिन्दुओं का विस्तृत विवरण प्रस्तुत है।

- **गाँधीजी की नीतियों की वर्तमान प्रासंगिकता**

19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारतभूमि पर एक दूत अवतरित हुआ जो भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व में छाकर अंतरिक्ष में विलीन हो गया। यह दूत और कोई नहीं वरन गाँधीजी ही थे,उनका अवतरण किसी एक के लिये नहीं वरन् सभी के लिए है। गाँधीजी ने समस्याग्रस्त भारत को आजाद कराया,अहिंसा से हिंसा को हराया,ब्रिटिश हुकूमत से भारत स्वतंत्र कराया,अपने प्रयास में वे सफल रहे। गाँधीजी ने अविद्या को विद्या, असत् को सत्, अंधकार को प्रकाश एवं हिंसा को अहिंसा से मिटाने की जन-जागृति जगाई। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान सत्य और अहिंसा का उद्घोष कर आंदोलन की धार को और पेनी करने वाले महात्मा गाँधी किसी परिचय के मोहताज नहीं। उन्होनें स्वतन्त्र भारत के पुनर्निर्माण के लिए रामराज्य का स्वप्न देखा था। वे कहा करते थे कि नैतिक और सामाजिक उत्थान को ही हमने अहिंसा का नाम दिया है। यह स्वराज्य का चतुष्कोण है। इनमें से एक भी अगर सच्चा नहीं है तो हमारे स्वराज्य की सूरत ही बदल जाती है। राजनीतिक स्वतन्त्रता से उनका मतलब किसी देश की शासन प्रणाली की नकल से नहीं है। उनकी शासन प्रणाली अपनी-अपनी प्रतिभा के अनुसार होगी, परन्तु स्वराज में हमारी शासन प्रणाली हमारी अपनी प्रतिभा के अनुसार होगी। उन्होनें उसका वर्णन 'रामराज्य' शब्द के द्वारा किया है। अर्थात् विशुद्ध राजनीति के आधार पर स्थापित तंत्र। उनके स्वराज्य को लोग अच्छी तरह समझ लें, भूल न करें। संक्षेप में वह यह है कि विदेशी सत्ता से सम्पूर्ण मुक्ति और साथ ही संपूर्ण आर्थिक स्वतंत्रता । इस प्रकार एक सिरे पर आर्थिक स्वतंत्रता है और दूसरे सिरे पर राजनीतिक स्वतंत्रता, परन्तु इसके दो सिरे और भी हैं। इनमें से एक है नैतिक व सामाजिक और दूसरा धर्म। इसमें हिन्दू धर्म, इस्लाम, ईसाई आदि आ जाते हैं। परन्तु एक जो इन सबसे ऊपर है, इसे आप सत्य का नाम दे सकते हैं। सत्य यानि कि केवल प्रासंगिक ईमानदारी नहीं बल्कि वह परम सत्य जो व्यापक है और उत्पत्ति व लय से परे हैं।

मूल रूप से गाँधीजी की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था करूणा, प्रेम, नैतिकता, धार्मिकता व ईश्वरीय भावना पर आधारित है। उन्होनें नर सेवा को ही नारायण सेवा मानकर दलितोद्धार व दरिद्रोद्धार को अपने जीवन का

ध्येय बनाया। वे शोषणमुक्त, समतायुक्त, ममतामय, परस्पर स्वावलंबी, परस्पर पूरक व परस्पर पोषक समाज के प्रबल हिमायती थे। उनका मानना था कि राजसत्ता और अर्थसत्ता के विकेंद्रीकरण के बिना आम आदमी को सच्चे लोकतंत्र की अनुभूति नहीं हो सकती सत्ता का केंद्रीकरण लोकतंत्र की प्रकृति से मेल नहीं खाता। उनकी ग्राम स्वराज की कल्पना भी राजसत्ता के विकेंद्रीकरण पर आधारित है।

- ❖ गाँधीवादी विश्व दृष्टि : सामाजिक चिन्तन

महात्मा गाँधी के वचनानुसार, "इस संसार में मैं धनिको को देख रहा हूँ। जिन वस्तुओं को वे प्राप्त करते है, उनमें से कुटिलतावश कुछ भी नहीं देते। वे अधिकाधिक धन एकत्र करते हैं और आनन्दोपभोग में लीन रहते है। राजा धरती के राज्यों को जीतकर भी समुद्र के इस पार की धरती का समुद्र के किनारे तक का स्वामी होकर भी अतृप्त रहता है और उसकी कामना करता है जो समुद्र के उस पार है। राजा और अन्य लोग अतृप्त इच्छाओं के साथ ही मृत्यु के शिकार हो जाते है। उसकी धन सम्पत्ति को उत्तराधिकारी ले लेते हैं किंतु अपने कर्मों का फल वही भोगता है। कोई खजाना, पत्नी या सन्तान, धन-सम्पति या राज्य मरने वाले के साथ नहीं जाते। बुद्ध के वचन में लेश मात्र भी अतिशयोक्ति नहीं है। उनके विचारों में निहित नैतिकता बोध एवं धन संग्रह के प्रति गहरी घृणा गाँधीवादी विश्व दृष्टि की सामाजिक भाव भूमि को समझने की कुंजी है। गाँधीवादी विश्व दृष्टि में किसी तत्व चिन्तन की खोज अप्रासंगिक है। वह जीव और ब्रहम आत्मा, परमात्मा एवं माया की अमूर्त संकल्पनाओं की ज्ञान शास्त्रीय मीमांसा की उपेक्षा करती है। उसमें दलितों-दुखियों, परित्यक्तों – उपेक्षितो एवं दरिद्र नारायणों की बहु संख्यक विश्वजनीन आबादी और उसके उद्धार का प्रश्न महत्वपूर्ण है।

समाज के नैतिक उत्थान एवं पुनर्संस्कार के लिए बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' की वृहत्तर लोक मंगल की कामना से पूर्ण होने के बावजूद गाँधीवादी विश्व दृष्टि प्रचलित अर्थ में किसी शास्त्र या दर्शन की स्थापना नहीं करती है। एक तरह से वह उसका निषेध ही करती है। कारण की गाँधीवादी विश्व दृष्टि का आधार स्वानुभूत अनुभव है। तत्व मीमांसीय चिंतन के निषेध और उससे उपजे विचार शून्य को भरने में गाँधीजी ने विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया। जो बात तत्काल अस्तित्व में आयी थी वह पूँजीवादी देशो की औपनिवेशिक नीति

एवं उत्पीड़ित राष्ट्रों का राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन था। भारत ब्रिटेन की औपनिवेशिक नीति का शिकार था। ब्रिटिश अत्याचारों के कारण भारतीय समाज की विकास प्रक्रिया बाधित हुई। प्राथमिक स्तर पर जिस बात की आवश्यकता थी वह भारतीय जनता के कष्ट निवारण की ही थी।

- ❖ अहिंसा: व्यावहारिक दृष्टिकोण

गाँधीजी ने अहिंसा के व्यावहारिक दृष्टिकोण की व्याख्या करते हुए कहा है कि मानव को अपने जीवन में पूर्णरूपेण व निरपेक्ष अर्थो में अहिंसक होना असंभव ही हैं। मनुष्य का भौतिक अस्तित्व पूर्ण अहिंसा के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। जीवन हेतु मनुष्य सांस लेता है, एक सांस के साथ करोड़ों जीवाणु मर जाते है। मनुष्य के भोजन हेतु वनस्पतियों की क्षति होती है अतः मनुष्य को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिये प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से हिंसा करनी होती है। पूर्ण अहिंसा के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा यह भी है कि समाज में जो अपराध व हिंसा होती है उनके लिए मनुष्य ही उत्तरदायी होता है। गाँधीजी ने कहा कि अहिंसा का व्यावहारिक अर्थ है कि जानबूझकर हिंसा नहीं करना। अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु न्यूनतम हिंसा संभव है। यहीं व्यावहारिक हिंसा है। अहिंसा एक मताग्रही दृष्टिकोण नहीं है। उसमें परिस्थितियों और व्यावहारिक कारणों के संदर्भ में रूपान्तरण होते है। गाँधीजी ने एक उदाहरण देते हुए कहा कि एक किसान को अपनी फसल को कीटाणु व अन्य जंगली जानवरो से रक्षा हेतु कीटनाशकों का प्रयोग या उन्हें मार देना पड़ता हैं। फसल की रक्षा के लिये कीटाणुओं या फसल को क्षति पहुचाने वाले जीव-जन्तुओं के विरूद्ध की गई हिंसा से अहिंसा का निषेध नहीं होता है वरन अहिंसा के नाम पर फसल को जानवरों और कीटाणुओं द्वारा नष्ट होते रहने देना अनुचित होगा।" गाँधीजी ने कहा कि यह कार्य हिंसक नही है। इसके पीछे एक व्यापक उद्धेश्य निहित है- "मनुष्यों के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए अन्न का उपयुक्त मात्रा में उत्पादन। अतः यह हिंसा नहीं है। वर्तमान में अहिंसा की प्रासंगिकता को स्पष्ट करते हुए कहा जा सकता है कि गाँधीजी की अहिंसा मानव जाति के पास उपलब्ध एक महानतम शक्ति हैं। यह विनाशकारी अस्त्रों से भी प्रभावी व शक्तिशाली है। यह असीमित शक्ति है। इसका मूल ईश्वरीय शक्ति है।

❖ नीतिप्रधान राजनीति का प्रारम्भ

महात्मा गाँधी का संपूर्ण चिन्तन वर्तमान समाज के लिए मार्गदर्शक एवं आध्यात्मिक मूल्यों से परिपूर्ण है। उनकी दृष्टि में नीतिविहीन राजनीति का कोई अर्थ नहीं है। कर्म से प्रेरित गाँधी चिन्तन में धर्म को द्वैतीयक नहीं माना गया है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का हर चरण उनके लिये अध्यात्म से सम्बद्ध है। जिसकी प्रेरणा उन्हें गीता से मिली। सद्गुणी व्यक्ति सर्वोपरि गाँधी के लिए सद्गुणी व्यक्ति सर्वोपरि है। उनके लिये ईश्वर, धर्म एवं व्यक्ति समानान्तर है। गाँधी को इनकी पारस्परिकता में किसी प्रकार का संशय नहीं है। "गाँधी ने धर्म, ईश्वर एवं नैतिकता को पर्याय माना है, अतः नैतिकता उनके लिये प्राथमिक है। यही कारण है कि गाँधीजी ऐसी राजनीति की कल्पना भी नहीं कर सकते जो नैतिकता से रहित हो। गाँधीजी ने अपने चिन्तन में सत्य को शक्ति पर प्रमुख माना। उन्होनें जीवन का लक्ष्य सत्य की खोज माना। शक्ति, राजनीति की कड़ी के रूप में तो मान्य थी, किन्तु राजनीति की प्राथमिकता के रूप में नहीं। इस कारण गाँधीजी सत्य से विमुख राजनीति कोकभी स्वीकृति नहीं देते है।

❖ सर्वेश्वर में विश्वास

गाँधी ने स्पष्ट किया कि सर्वेश्वर का उल्लेख किसी पंथ अथवा औपचारिकता का सूचक नहीं है। उसके अंतर्गत किसी भी धर्म मान्यता विश्वास में इंगित 'सर्वशक्ति' की स्वीकारोक्ति है। किसी भी विचारधारा, आस्तिकता, नास्तिकता के प्रतिवाद से परे, सर्वेश्वर को मान्यता देना सभी समाजो की अपरिमित नैतिकता का स्त्रोत है। गाँधी ने जाति, पंथ, मान्यता, औपचारिकता, विभेदीकरण से मुक्त समता तथा सदाशय संयुक्त नैतिकता को ही धर्मपरायणता का प्रमाण माना।

❖ अध्यात्म एवं गीता ज्ञान

गाँधीजी का अध्यात्म दर्शन विश्व को नवीन संदेश देता है। अध्यात्म का एक महत्वपूर्ण आयाम यह है कि व्यक्ति संकीर्ण "स्व" से उच्चतर शाश्वत "स्व" की ओर अग्रसर हो। गीता के इस अनवरत् संदेश का गाँधी पर

दूरगामी प्रभाव देखा जा सकता है। राजनीति के नवस्वरूपण हेतु गाँधी ने इसी मूल्य को व्यावहारिक जीवन में उतार कर नीति, नैतिकता एवं मानवीय आग्रहों को स्वाभाविक स्तर प्रदान किया आत्म उद्धीपन एवं आत्म-संज्ञान स्तरीय अनुभूति में ही गीता के मूल्यों ने गाँधी के जीवन को नवीन प्रयोजनशील आधार प्रदान किये सामाजिक एवं राजनैतिक परिवर्तन: वैचारिक प्रासंगिकता गाँधीजी की दृष्टि में सामाजिक परिवर्तन उतना ही अपरिहार्य होता है जितना राजनैतिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन राजनीतिक तथा आर्थिक परिवर्तन का समानान्तर और कई अर्थों में समानार्थक भी हो सकता है। गाँधीजी का सामाजिक परिवर्तन का विचार एक पूर्ण विचार था, जिसके अंतर्गत वे समस्त आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक व्यवस्था का रूपान्तरण चाहते थे। गाँधीजी ने सामाजिक परिवर्तन का औचित्य उसी स्थिति में माना जब राष्ट्र को विदेशी निरंकुशतावाद एवं समाज को अंतर्विरोधों से मुक्ति प्राप्त हो। चाहे गाँधी विचार-निर्माण का क्षेत्र दक्षिण अफ्रीका रहा हो, अथवा 1915 के पश्चात् भारत, प्रतीकात्मक स्तर पर चुनौतियाँ भिन्न होने पर भी सामाजिक परिवर्तन हेतु प्राथमिक महत्व के स्तर पर देखा जा सकता है। स्मरणीय है कि गाँधी के प्रयास में एक राजनेता, राजवेत्ता एवं राजनीतिज्ञ की भूमिका के साथ ही एक सुधारक विरोधवादी का व्यक्तित्व भी समाहित है।

- ❖ वैश्वीकरण की चुनौतियाँ: गाँधी की प्रासंगिकता

वैश्वीकरण की चर्चा का आरंभ विश्वग्राम की सुनहरी कल्पना से हुआ था। इस कल्पना के अंतर्गत संपूर्ण विश्व के लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने, सबको एक पारिवारिक सूत्र में बांधने के लिए अनगिनत नई नीतियाँ और योजनाएँ सामने आई है। विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व व्यापार संगठन जैसी अनेक संस्थाएं एक साथ सक्रिय हुई। इस क्रम में धरती के प्रत्येक क्षेत्र की उर्जा और उत्पादक क्षमता का सर्वेक्षण हो चुका है। परिणाम यह है कि विश्वग्राम धीरे-धीरे हितों के भूमण्डलीकरण में बदलता गया है। भारत के संदर्भ में देखें तो 1990 के बाद तेजी से यह देश वैश्वीकरण का लक्ष्य बना है। अपने चारों ओर के परिदृश्य पर विचार करें तो कई नये-नये शब्द अपनी नई-नई प्रयुक्तियों के साथ सक्रिय मिलेंगे। जैसै- बाजारवाद, उत्तर उपनिवेशवाद,

उत्तर आधुनिकवाद विश्वबाजार संरचनावाद, विखण्डनवाद उपभौक्तावाद आदि ।जनसमूह के इसी आखेट के खिलाफ खड़ा है गाँधी दर्शन गाँधी की चर्चा करना बीते हुए काल से संबन्धित नहीं है।आज भी महात्मा गाँधी का कृतित्व और चिंतन वर्तमान और भविष्य के लिये एक मजबूत आधारशिला है। विशेषतः वैश्वीकरण के इस दौर में आम आदमी पर मंडराते खतरों से जूझने की ताकत देता है। वैश्वीकरण के कारण पूँजीवाद और बाजारवाद के बढ़ते आक्रमणों का सामना करने में गाँधीजी की कथनी और करनी सही मार्गनिर्देश करती है। वैश्वीकरण ने बड़े पैमाने पर समाज को विखंडित किया है और शाश्वत मानवीय मूल्यों को समाप्त करने की साजिश की है। बाजार पर पैनी निगाह रखने वाले सूचना तंत्र के विस्तार ने हर आदमी को एक आर्थिक इकाई में बदल दिया है। वैश्वीकरण के इस दौर में लोग धीरे-धीरे वस्तु में बदलते जा रहे है। वैश्वीकरण की आदतें मनुष्य को मशीन की तरह निर्जीव बनाती जा रही है। ऐसे हालात में गाँधी के जीवन और सोच की दिशा व तरह रास्ता दिखाती है।

- ❖ नागरिक जीवन : अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में प्रासंगिकता

नई पीढ़ी के बहुत से लोग अक्सर बातचीत में एक-दूसरे से पूछते है कि गाँधीवादी विचारधारा की वर्तमान में सार्थकता क्या है ? महात्मा गाँधी ने कहा था- आँख के बदले आँख का प्रतिशोध भरा कानून अगर विश्व में लागू हो गया तो, पूरा विश्व अंधा हो जायेगा। वर्तमान में जब घृणा और बदले की मानसिकता व्यक्तिगत स्तर के ऊपर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आ चुकी है, आतंकवाद चरम पर है, परंतु आतंकवाद का जवाब भी आतंकवाद से ही दिया जा रहा है, बदला लेने के लिए किसी भी देश की अर्थव्यवस्था ध्वस्त कर वहाँ के बच्चों तक को दवाइयों और खाने से वंचित कर दिया जा रहा है, तब ऐसे समय में गाँधी विचारधारा और अधिक प्रासंगिक लगने लगी है। महात्मा गाँधी से पूरा विश्व प्रभावित रहा है। विश्व स्तर पर विशेषकर पश्चिमी प्रेस में महात्मा गाँधी पर आधारित जो समाचार प्रकाशित हुए है, उन्हें देखे तो गाँधी विचारधारा का विश्व में कितना प्रभाव है, इसका अंदाजा हमें हो सकता है। नार्वे में एक इंस्टीट्यूट है जो कोसोवो और बोस्निया में काम करने के लिए शांति रक्षकों को प्रशिक्षण दे रहा है। इस प्रशिक्षण में महात्मा गाँधी पर एक पूरा पाठ्यक्रम है। केलिफोर्निया में एक

स्कूल टीचर जॉन कीगले ने अपने आपको एक पेड़ से चैन से बांध रखा है। वह 1 नवंबर, 2002 से इसी पेड़ पर बने हुए एक प्लेटफार्म पर रह रहा है। यह एक 400 वर्ष पुराना ओक वृक्ष है, जिसे वह कटने से बचाना चाहता है। पुलिस ने जब बलपूर्वक 11 जनवरी, 2003 को उसे हटाया तो उसने कहा कि मैं यह सब सिर्फ महात्मा गाँधी के अहिंसा धर्म में विश्वास रखने के कारण कर पाया। यह उदाहरण हमें गाँधीजी के पर्यावरण संरक्षण की प्रासंगिकता दिखाता है।

- **शोध कार्य का महत्व**

I. वर्तमान युग में विश्व की राजनीति के समक्ष खड़ी समस्याओं के संदर्भ में गाँधीवादी चिंतन एवं नीतियों की प्रासंगिकता संबंधी विचार की महत्ता इस अध्ययन द्वारा स्पष्ट की जा सकेगी। इस अध्ययन का महत्व निम्न बिन्दुओं में स्पष्ट है-

II. इस अध्ययन द्वारा विश्व राजनीति के परिवर्तित आधारों को समझा जा सकेगा एवं इन आधारों के संरक्षण हेतु प्रभावशाली सकारात्मक प्रयास किये जा सकेंगे।

III. वैश्विक समस्याओं द्वारा अंतर्राष्ट्रीय राजनीति पर प्रभाव की जानकारी को प्रकाश में लाना।

IV. यह अध्ययन विश्व राजनीति में निहित कमियों का प्रत्यक्षीकरण करता है।

V. साध्य व साधन की अवधारणा द्वारा साधनों की पवित्रता सुनिश्चित करना।

VI. आतंकवाद एवं विश्व राजनीति का परस्पर एक-दूसरे पर प्रभाव दर्शाना ।

VII. विश्व स्तर पर गाँधीजी से प्रभावित विभूतियों के संदर्भ में गाँधीवादी चिंतन द्वारा वर्तमान विश्व राजनीति को बेहतर दिशा दी जा सकेगी।

VIII. अनैतिकता व अराजकता के प्रतिकार में शांतिपूर्ण साधनों की भागीदारी बढ़ाना।

IX. शक्तिवादी राजनीति के युग में अहिंसा को सर्वोच्च राजनीतिक शक्ति के रूप में विकसित करना।

X. मानव के वैचारिक दृष्टिकोण में परिवर्तन सुनिश्चित किया जा सकेगा जिससे उसमें नवीन सोच का विकास होगा।

XI. सत्य एवं अहिंसा की अंतर्राष्ट्रीय प्रभाविकता से संबंधित अनुभवजन्य एवं व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना।

- **सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. अरविंद पवन कुमार" ,वर्तमान में गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता," आर्टिकल ऑन गाँधी जनवरी 28, 2010
2. ओल्डेनबर्ग एच., "बुद्धाः हिज लाइफ ,टिचिंग्स एण्ड हिज आर्डर," कलकत्ता, 1927, पृष्ठ 64
3. कौशिक आशा" ,गाँधी नयी सदी के लिये ,"रावत पब्लिकेशन ,जयपुर, पृष्ठ 108

4. गाँधी, "हिन्द स्वराज, अहमदाबाद, 1938, पृष्ठ 35

5. शुमैकर ई. एफ., "स्मॉल इज ब्यूटीफुल", ऑक्सफोर्ड, 1973

6. हरिजन, अप्रेल 7, 1946

7. यंग इंडिया, अगस्त 8, 1931

8. गाँधी, "यरवदा मंदिर से नवजीवन, अहमदाबाद, पृष्ठ 66

9. गाँधी, "स्पीचेज एण्ड राइटिंग्स ऑफ महात्मा गाँधी", मद्रास जे. ए.नटेशन, पृष्ठ 344

10. गाँधी, हिन्द स्वराज, पृष्ठ 226

11. हरिजन, सितंबर 7, 1935

12. यंग इंडिया, जुलाई 2, 1931, पृष्ठ 286

13. बहरवाल डॉ. मनोज कुमार, "भारतीय राजनीतिक चिंतक",

14. हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर, 2014, पृष्ठ 397

15. शर्मा डॉ. अपर्णा, "गाँधी-वाणी", पारीक बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, 2010,पृष्ठ 21-22

16. बहरवाल डॉ. मनोज कुमार, "भारतीय राजनीतिक चिंतक", हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर, 2014, पृष्ठ 398

17. कौशिक आशा, "गाँधी नयी सदी के लिये रावत पब्लिकेशन, जयपुर,पृष्ठ 90

18. कलेक्टेड वर्क्स ऑफ गाँधी, खण्ड-15, पृष्ठ 312

19. यंग इंडिया, दिसंबर 31, 1931, पृष्ठ 427-428

20. गाँधी, "स्पीचेज एण्ड राइटिंग्स ऑफ महात्मा गाँधी, मद्रास नटेशन,1922, पृष्ठ 494

21. हरिजन, मार्च 23, 1940, पृष्ठ 55

22. नैहरू जवाहर लाल, "एन ऑटोबायोग्राफी (1936)", नई दिल्ली ई, एलाइड पब्लिशर्स 1962 पृष्ठ 505-506